International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 01(II), January- March, 2025, pp. 203-207

रामायण के विभिन्न कांडों का आदर्श गृहस्थ जीवन व आदर्श पारिवारिक जीवन में महत्व

रितु शर्मा*

प्रस्तावना

राम के आदर्श चरित्रवान व्यक्तित्व की खोज में रामायण का जन्म हुआ। रामायण के चरित्र को हृदय में धारण कर वाल्मीकि ने साहित्य की जिस सलिल गंगा की अवतारणा की परवर्ती युग में उसमें अनेक कवि स्नान करके धन्य हो गए रामायण मूलतरू राम के जीवन की काव्यमय प्रस्तुति है। इस ग्रंथ में 24000 श्लोक है। इसलिए इसे "चतुर्विंशति सहिता" कहां गया है। राम की यशोगाथा को उनके जन्म से मृत्यु पर्यंत तक सात कांडों में निबद्ध किया है– बालकांड, अयोध्या कांड, अरण्यकांड, किष्किंधा कांड, सुंदरकांड, लंका कांड, उत्तरकांड।

कहा जाता है की रामायण का उदय करुणा के उद्रेक से हुआ है। काम मोहित कौ्च पक्षियों की जोड़ी में से एक को शिकारी के बाण से मरते देखा वाल्मीकि का कोमल हृदय करुणा से भर गया और उनके मुख से यह शब्द निकल पड़े "हे निषाद तुमने काम से मोहित होकर इस कौ्च पक्षी को मारा है, अतः तुम अंतकाल तक प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं कर सकोगे। इस वाणी को सुनकर ब्रह्मा प्रकट हुए और उन्होंने कवि को "रामचरित्र" लिखने का आदेश दिया। जिसके फल स्वरुप रामायण महाकाव्य की रचना हुई। रामायण को गृहस्थ जीवन का महाकाव्य कहा गया है। क्योंकि इसमें गृहस्थ जीवन के अनेक चरित्र माता–पिता, भाई, पत्नी, पुत्र, मित्र, सेवक सभी जनों का आदर्श चरित्र प्रस्तुत किया गया है। इसीलिए रामायण को भारतीय संस्कृति का मूल ग्रंथ कहा गया है। राम आर्य जीवन के उत्कृष्ट आदर्श के प्रतीक है। आदर्श पुत्र के रूप में पिता की आज्ञा का पालन किया राम और सीता का पारस्परिक प्रेम और त्याग भारतीय गृहस्थ जीवन के लिए आदर्श है, लक्ष्मण एक आदर्श भाई का उदाहरण प्रस्तुत करते है तो भरत एक भक्त का विभीषण, सुग्रीव, हनुमान, जामवंत, जटायु ऐसे विशिष्ट चरित्र है जिनकी रचना किसी कवि के लिए सरल कार्य नहीं है। रामायण के विभिन्न कांडों का अध्ययन करने से पूर्व में

"वंदे वाणी विनायक को देवी सीता (वाणी) और रामचरित्र के श्री राम (विनायक) को प्रणाम।"

" सुनु सेवक सूरधेनु । विधि हरि हर वंदित पद रेनू।"

भावार्थ– हे सेवक और सुर तरु और सुरधेनु विधि हरि हर आपके चरणों में नतमस्तक है ।

बालकांड

बालकांड राम कथा का प्रारंभ राम के जन्म से होता है। कौशल राज्य के राजा दशरथ के तीन रानियां और चार पुत्र थे। सबसे बड़ी रानी कौशल्या के पुत्र राम सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण व शत्रुघ्न। सबसे छोटी रानी कैकेयी का पुत्र भरत । बालकांड में राम और उनके भाई बाल्य काल व्यतीत करके युवा अवस्था में प्रवेश करते हैं । विश्वामित्र से शिक्षा प्राप्त करना, असुरों का वध करना व सीता स्वयंवर में भाग लेते हैं ।सीता राम का वरण करती है। साथ ही अन्य भाइयों का भी विवाह संपन्न होता है । इन सब की जानकारी हमें इस कांड से प्राप्त होती है तुलसीदास जी वर्णन करते हुए कहते हैं कि–

* सहायक आचार्य, श्री संस्कार महिला महाविद्यालय, बस्सी, राजस्थान।

सो केवल भगतन हित लागी। परम कृपाल प्रनत अनुरागी।।

जेहि जन पर ममता अति छोडू। जेही करुणा करि किन्ह न कोहू।।

भावार्थ– यह लीला केवल भक्तों के लिए ही है। क्योंकि भगवान परम कृपालु है और शरणागत के बड़े प्रेमी है। जिनकी भक्तों पर बड़ी ममता व कृपा है। जिन्होंने एक बार जिस पर कृपा कर दी उस पर फिर क्रोध नहीं किया। इस कांड से हमें शिक्षा मिलती है कि कैसे बच्चों को शिक्षा और मूल्यों के साथ पाला जाए और कैसे वह अच्छे नागरिक बन सकते हैं। दशरथ के अपने पुत्रों के प्रति समर्पण और पुत्रों के माता–पिता के प्रति समर्पण की शिक्षा मिलती है। आदर्श विवाह और प्रेम की शिक्षा, राम के चरित्र के माध्यम से सत्य, धर्म व न्याय की शिक्षा तथा दूसरों की मदद करने की शिक्षा मिलती है। वर्तमान की शिक्षा प्रणाली में इनका मूल्य निरंतर घटता जा रहा है। अतः हमें इन पत्रों से जीवन में सीख लेनी चाहिए जिससे हम समग्र रूप से सफल नागरिक बन सके।

अयोध्या कांड

बालकांड की कथा जहां उत्सवो की कथा है। वही अयोध्या कांड की कथा आंसुओं से भीगी हुई है। यहां बड़े पुत्र राम के राज्याभिषेक की तैयारी चल रही थी। लेकिन स्वार्थ के कारण छोटी रानी कैकई ने दो इच्छाएं पूर्ण करने का आग्रह किया– पहला राज्य का उत्तराधिकारी उसका पुत्र भरत होगा दूसरा राम को 14 वर्ष का वनवास। यहां पर राम ने पिता की आज्ञा को सर्वोपरि माना व राजमहल के सुखों को त्याग कर एक आदर्श पुत्र का उदाहरण प्रस्तुत किया। वही सीता ने पतिव्रत धर्म का पालन करते हुए सभी सुख व ऐश्वर्या को छोड़कर पति के साथ वन में चली गई। वहीं लक्ष्मण ने अपनी नव विवाहित पत्नी उर्मिला को छोड़कर अपने बड़े भाई वह भाभी की सेवा में वन को चले गए। भरत जी राम को मनाने के लिए वन में जाते हैं परंतु राम उन्हे समझा कर अयोध्या भेज देते हैं। परंतु भरत जी ने अयोध्या की गद्दी पर बड़े भाई का अधिकार होने के कारण उनकी चरण पादुका स्थापित की व स्वयं 14 वर्ष तक अयोध्या की गद्दी पर नहीं बैठे।

तुलसीदास जी कहते है–

"प्रभु कर कृपा पावरी दिनी सदर भरत सिस धरी लिनी।।"

इस कांड में हमें चारों भाइयों के अगाध प्रेम, त्याग, समर्पण का वर्णन मिलता है। इससे हमें सीख मिलती है यदि हम राम की तरह राग, द्वेष, ईर्ष्या, मद, मोह से ऊपर उठकर कर्तव्य निभाएं तो आदर्श गृहस्थ व पारिवारिक जीवन जिया जा सकता है।

अरण्य कांड

इस कांड में सीता व अनसूया का मिलन उन्हें वस्त्र व आभूषण प्रदान करना पतिव्रत धर्म की सीख, अगस्त्य का संवाद, पंचवटी में निवास, सूर्पनखा की कहानी, मारीच का प्रसंग, सीता हरण, जटायु का रावण से युद्ध, राम जी का सीता के लिए विलाप, शबरी पर कृपा का वर्णन है । इसमें अनसूया माता ने सीता जी को पतिव्रत धर्म के बारे में बताया है की–

छन सुख लगी जन्म सत सत कोटी। दुख न समुझ तेही सम को खोटि।।

बीनू श्रम नारी परम गति ल्हई। पतिव्रत धर्म छाडी छल गहई।।

भावार्थ – जो स्त्री क्षण भर के सुख के लिए करोड़ों जन्मों के दुख को नहीं समझती उसके समान दुष्ट कौन होगी जो स्त्री छल छोड़कर पतिव्रत धर्म का को ग्रहण करती है वह बिना परिश्रम के परम गति को प्राप्त करती है । नारीजनित आदर्शो को रामायण में सीता के माध्यम से प्रकट किया गया है । रामायण कालीन नारी धर्म परायण होती थी । उसका दैनिक जीवन संयमित, अनुशासित, कठोर होता था । नारी का आर्य होना पति पारायण होना वह प्रलोभन से दूर रहकर पति की छाया में जीवन व्यतीत करना आदर्श होता था । आधुनिक युग में नारी का आदर्श रूप घटता जा रहा है जिसके दुष्परिणाम स्वरूप परिवार का टूटना, एकल परिवार का बढ़ना,

बच्चों में अकेलापन, दादा दादी के प्रेम से वंचित होना, तनाव का सामना करना पड़ रहा है । इससे मानव जाति को खतरा बना हुआ है यदि समय रहते हैं इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो समाज का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा अतः हमें समाज को संस्कारों से युक्त बनाने के लिए सीता व राम के गुणों व आदर्शो को अपनाना होगा।

किष्किंधा कांड

इसमें अरण्य कांड की घटनाओं के बाद राम और हनुमान का मिलन, सुग्रीव को अपना राज्य वापस दिलाना, बाली की मृत्यु, सुग्रीव राम संवाद, सीता जी की खोज के लिए वानरों का समुद्र पर आना, जामवंत जी का हनुमान जी को बल याद दिलाकर उत्साहित करने का वर्णन है । इस कांड में जब राम जी ने बाली को छुपाकर मारा तो बाली ने इसका कारण पूछा तब राम जी ने कहा कि–

अनुज बंधु भगिनी सूत नारी सुनू सट कन्या सम ए चारी।।

इन्हीं कुदृष्टि बिलोकई जोई। ताहि बंदे कछु पाप न होई।।

भावार्थ– राम जी ने कहा है मूर्ख! सुन छोटे भाई की स्त्री, बहन, पुत्र की स्त्री और कन्या यह चारों समान है जो कोई बुरी दृष्टि से देखता है उसे मारने में कोई पाप नहीं है। इसमें बताया गया है की नारी देव तुल्य है यदि उस पर कोई गलत दृष्टि डालता है तो उसे दंड देने में कोई बुराई नहीं है। सुग्रीव का राज्याभिषेक, हनुमान जी वह वानर सहित सीता माता की खोज के लिए समुद्र तट पर पहुचने के बाद जामवंत जी हनुमान जी से कहते हैं कि

"कहई रीछपति सुनो हनुमाना। का चुप सादी रहेहूं बलवाना।।

पवन तनय बल पवन समाना। बल बुद्धि विवेक विज्ञान निधाना।।

" कवन सो काज कठिन जग माही जो नहीं होय तात तुम पाही।"

जामवंत (रिछपति) जी कह रहे हैं कि है की हनुमान सुनो हे बलवान तुम चुप क्यों बैठे हो तुम पवन के पुत्र हो और बल में पवन के सामान तुम्हारे पास बुद्धि विवेक व ज्ञान का खजाना है । संसार का ऐसा कोई काम नहीं है जो आप नहीं कर सकते । इससे हमें हनुमान जी की शक्ति और राम के प्रति निष्ठा व समर्पण ज्ञान व शक्ति का महत्व सुग्रीव की मित्रता व नारी के सम्मान की शिक्षा मिलती है। ।

सुंदरकांड

यह रामायण का अत्यंत लोकप्रिय भाग है। इसमें हनुमान जी का लंका प्रस्थान। लंकिनी प्रहार, सीता जी का स्वप्न, हनुमान– विभीषण संवाद, सीता जी को मुद्रिका निशानी के रूप में देना, अशोक वाटिका का विध्वंस, लंका में आग लगाना, हनुमान जी द्वारा निशाने के तौर पर चूड़ामणि पाना, विभीषण का राम जी की शरण में जाना, राम जी द्वारा शरणागत की रक्षा करना अपना कर्तव्य समझना। इसमें राम की कृपा से हनुमान जी द्वारा किए गए साहसिक कार्यों का वर्णन है। सुंदरकांड से हमें सीख मिलती है कि धैर्य व बुद्धि से कठिन से कठिन कार्य को भी किया जा सकता है आजकल के युवाओं को धैर्य की आवश्यकता है यदि निरंतर सुंदरकांड का पाठ करें तो हमें हनुमान जी की तरह बल, बुद्धि, आत्मविश्वास, प्राप्त होगा तथा नकारात्मकता दूर होगी। हम सकारात्मक बनेंगे जिससे हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल हो सकेंगे।

लंका कांड

लंका कांड सीता की खोज के पश्चात लंका पर आक्रमण और रावण की सेना से राम का युद्ध इस कांड की कथा को विस्तार देता है। इसमें अंगद ने कहा है कि–

सदा रोग बस सतत क्रोधी। विष्णु विमुख श्रुति संत विरोधी।।
तनु पोषक निंदक अंग खानी। जीव तू सव सम चौदह प्राणी।।

भावार्थ– नित्य का रोगी, क्रोधी, भगवान विष्णु से विमुख, वेद और संतों का विरोधी, स्वयं के ही शरीर का पोषण करने वाला, निंदा करने वाला, और पाप की खान यह 14 प्राणी जीते ही मुर्दे के समान है । अतः हमें इन दुर्गुणों को त्याग कर सतगुणों को अपनाना चाहिए । राम जी ने विभीषण जी को एक विजयी मनुष्य के गुणो से अवगत करवाते हुए कहा है कि–

अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलिमुख।।
कवच अभेद विप्र गुरु पूजा ऐही सम विजय उपाय न दूजा।।

भावार्थ– निर्मल व स्थिर मन तरकश के समान है। शम (मन का वश में होना) यम (अहिंसा वादी) नियम (शौचादि) यह बहुत से बाण है। ब्राह्मण और गुरु का पूजन अभेद्य कवच है। इसके समान विजय का दूसरा उपाय नहीं है। राम जी ने इन्हीं गुणो के कारण अहंकारी रावण पर विजय प्राप्त की थी ।विभीषण का राज्याभिषेक करके वनवास की अवधि पूर्ण हो जाने के कारण पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या के लिए प्रस्थान किया। अयोध्या में उनका भव्य स्वागत किया गया व उनका राज्याभिषेक किया गया।

उत्तर कांड

रामायण का अंतिम भाग उत्तर कांड में वर्णित है। राम के राजा बन जाने पर रावण के यहां रहने के कारण जन समुदाय ने सीता की पवित्रता में शंका प्रकट की लोगो की निंदा से बचने के लिए राम ने गर्भवती सीता का त्याग कर देते हैं। फादर कामिल बुल्के का स्पष्ट मत है, कि वाल्मीकि रामायण का मूल रामायण के बाद की प्रक्षिप्त रचना है। जबकि वाल्मीकि रामायण 6 कांडों के बाद समाप्त हो जाती है मूल रामायण के साथ बौद्ध काल में छेड़छाड़ की गई है और उत्तरकाण्ड जोड़ दिया गया जिससे राम जी को बदनाम करने का प्रयास किया गया। हालांकि सभी शोधकर्ता एकमत है कि वाल्मीकि जी ने जो लिखा वही प्रमाणित है।

रामायण का सांस्कृतिक महत्व

रामायण का सांस्कृतिक महत्व बहुत अधिक है। वाल्मीकि ने इस महाकाव्य के द्वारा जीवन के आदर्श भूत और शाश्वत मूल्यो का निर्देश किया है। इसमें उन्होंने राजा, प्रजा, पुत्र, भाई, पत्नी, सेवक आदि संबंधों का आदर्श स्वरूप प्रस्तुत किया है। राम का चरित्र एक आदर्श महापुरुष के रूप में है जो सत्यवादी, दृढ़ संकल्प वाले परोपकारी, चरित्रवान, विद्वान, शक्तिशाली, सुंदर, प्रजापालक वह धीर पुरुष है। इस प्रकार सीता के आदर्श व गौरवपूर्ण पत्नी को वाल्मीकि ने स्थापित किया राम का भ्रातृत्व प्रेम रामायण में अत्यंत सरल व भावपूर्ण शब्दों में व्यक्त किया है।

कलत्राणी देशे देशे च बान्धवारू ।त तु देश न पश्यामि यत्र भ्ाता सहोदररू ।।

भावार्थ– किसी भी देश में पत्नी प्राप्त की जा सकती है तथा बंधुत्व भी कहीं स्थापित किया जा सकता है किंतु सहोदर भाई कहीं नहीं प्राप्त हो सकता।

- **भाषा –** रामायण की रचना के पूर्व केवल वैदिक संस्कृत में केवल अक्षर संख्या का महत्व था। लेकिन रामायण में सर्वप्रथम लौकिक छंद का प्रयोग हुआ है। रामायण की भाषा सरल, सलिल, परिष्कृत है। प्रसाद एवं माधुर्य से युक्त वेदर्भी रिति का सुंदर रूप रामायण में दिखाई देता है ।
- **रस –** रामायण एक ऐसा महाकाव्य है जिसमें सभी रसों की सृष्टि हुई है लेकिन उनमें करूण वीर और शृंगार रस को प्रमुखता दी गई है।
- **सौंदर्य –** रामायण में जहां एक और मानव मन के अंतर मन का सहज सूक्ष्म और सुंदर विश्लेषण हुआ है। वहीं दूसरी ओर ब्रह्म परिवेश और प्राकृतिक सौंदर्य को जीवंत रूप में मूर्त किया गया है। अयोध्या कांड में गंगा, किष्किंधा कांड में पंपा सरोवर, अरण्यकांड में शरद में वर्षा ऋतु का सजीव,आकर्षक व हृदयग्राही वर्णन हुआ है।

- **गृहस्थ व पारिवारिक जीवन का महाकाव्य –** रामायण के पात्र आदर्श पारिवारिक कर्तव्य सूत्र में बंधे हुए हैं। दशरथ कुल का प्रत्येक सदस्य अपनी सांस्कृतिक चेतना में जीवंत है। पिता के प्रति गौरव भावना आदर्श पति–मातृ–पितृ–भक्त–गुरु सेवा पारायण परिजनों के संरक्षक गुरु माता–पिता वह सेवक के प्रति आज्ञाकारिता के विषय में भरत का कथन है कि– उचित अनुचित का विचार किए बिना उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। किसी आदर्श संबंध के लिए दोनों पक्षों का गुणवान वह विनम्र होना आवश्यक है। लेकिन आधुनिक युग में टूटते रिश्ते, माता–पिता के टूटते संबंध, भाईचारे की कमी, सौहार्द की कमी, नैतिक मूल्य का हास, धर्म से विमुख होकर अपराधी प्रवृत्तियों को अंजाम देना। इन सब का कारण है– संस्कारों की कमी, सहयोग की कमी, अविश्वास क्योंकि हम हमारी करोडो गुणो की खान भारतीय संस्कृति परंपरा को छोड़कर पाश्चात्य सभ्यता को अपना रहे हैं जिसमें ना तो प्रेम के लिए स्थान है ना ही भावनाओं के लिए अतः हमें यदि राम राज्य स्थापित करना है, तो प्रेम, वात्सल्य, विश्वास, बड़ों का सम्मान यह सब सीखना है तो हमें हमारी भारतीय संस्कृति को जानना होगा निरंतर उसके गुणो काअध्ययन कर स्वयं व अपने बच्चों का विकास करना होगा। रामायण, महाभारत व पुराणो का अध्ययन करके उनकी शिक्षा को अपना कर ही हम सफल व आदर्श गृहस्थ व आदर्श पारिवारिक जीवन जी सकते है।

निष्कर्ष

वर्तमान में सभ्य समाज, भय रहित समाज की स्थापना के लिए रामायण महाकाव्य के आदर्श राम के चरित्र वह उनके गुणो को अपनाने की आवश्यकता है। जिससे रामराज्य की स्थापना हो सके समाज में शांति व नैतिक मूल्यों का विकास हो सके। इसके लिए हम सबको मिलकर प्रयास करना चाहिए। आधुनिकता के बहकावे में ना आकर हमारी संस्कृति व पौराणिक ग्रंथो को अपनाकर सभ्य समाज की स्थापना की जानी चाहिए। जिससे एक आदर्श पारिवारिक व आदर्श गृहस्थ जीवन को जिया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वाल्मीकि रामायण
2. रामचरित्र मानस तुलसीदास कृत
3. रामचरित्र मानस बालकांड, अयोध्या कांड
4. रामचरित्र मानस अरण्य कांड, किष्किंधा कांड, सुंदरकांड
5. भारतीय सभ्यता व संस्कृति का इतिहास एल पी वेश्य, टी. एन गुप्ता
6. भारतीय संस्कृति के मूलाधार शिवकुमार गुप्त, कमलनयन
7. फादर कामिल बुल्के प्रयाग विश्वविद्यालय–राम कथा उत्पत्ति विकास हिंदी।
8. विकिपीडिया– उत्तरकाण्ड
9. एनसीईआरटी संस्कृत साहित्य परिचय कक्षा 11 अध्याय 3 रामायण महाभारत पुराण।

❖◆❖